फलप्रकाश

रचयिता—

पं० राजाराम ज्योतिषी फर्रुखाबाद

प्रकाशक—

तेजकुमार- बुकडिपो, (प्रा०) लि० लखनऊ.

उत्तराधिकारी—

नवलकिशोर-बुकडिपो, लखनऊ.

मुद्रकः—तेजकुमार-प्रेस (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ,

चौथी बार २०००] १९९७ मूल्य ६)

श्रीगणेशाय नमः

फलप्रकाशम्

रामविनोदिनीटीकया समलंकृतम् ।

—:०:—

मंगलाचरणम् ।

लम्बोदरं विघ्नहरं सुरेशं गजाननं गौरिसुत गणेशम् आनन्ददं सिद्धि प्रदं परेशं सदा भवानीतनयंनमामि १ वसिष्ठगर्गादि मुनिप्रणीतान्वराहकल्याण कृताभिरीक्ष्य सज्जातके खेटफलं क्रमेण सुयोषितां सद्यशसे कृतं हि ॥ २ ॥

वशिष्ठ गर्गादि मुनियों के बनाये हुए और वराहमिहिर और कल्याण की कृति को देखकर, अच्छे जातकों का ग्रहफल देखकर, सुयश प्राप्त करने के लिये स्त्रियों के जन्म का फल कहता हूँ ॥ २ ॥

अथ तनुभावस्थितसूर्यफलम् ।

मूर्तौरविस्तीव्रमुखांप्रसूतेनारींतथातीव्ररुजासमेताम् ।
दुष्टस्वभावांसुकृशांकृतघ्नांपरान्नरक्तांप्रभयाविहानाम १

जिस स्त्री के जन्म समय लग्न में सूर्य स्थित हो, तो वह स्त्री तीव्र मुखवाली तथा तीव्र रोगोंवाली, दुष्ट स्वभाववाली, दुर्बलशरीर, अहसान न माननेवाली और पराये अन्न में रत तथा कान्तिरहित होती है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितसूर्यफलम् ।

धनस्थितोऽर्को धनधान्यहीनां
कठोरवाक्यां गतभक्तिभावाम् ।
युद्धप्रियां द्वेषरतां खलां च
नारीं प्रसूते गतसौहृदां च ॥ २ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय धनभाव में सूर्य स्थित हो, तो वह स्त्री धन धान्य से हीन, कठोर वचन कहनेवाली, भक्ति-भावरहित, लड़ाई करनेवाली, वैर करनेवाली, दुष्टप्रकृति और मित्रभाव-रहित होती है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितसूर्यफलम् ।

तृतीयगस्तीक्ष्णकरः प्रसूते ।
सौख्येन हीनां वनितां सदैव ।
निरोगदेहां च सुरूपवक्त्रां
विशालवक्षोजनतां नितान्तम् ॥ ३ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय तीसरे घर में सूर्य बैठा हो, तो वह स्त्री सुख से हीन, निरोग शरीर, अच्छे रूप और मुखवाली, तथा सुन्दर स्तनभार से नम्र होती है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितसूर्यफलम् ।

चतुर्थगस्तीक्ष्णकरः प्रसूते
सौख्येन हीनां वनितां सदैव ।
सरोगदेहां विकरालदंष्ट्रां
प्रभाविहीनां जनताविरुद्धाम् ॥ ४ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय चतुर्थ भाव में सूर्य बैठा हो, तो वह स्त्री सुख से हीन, सदा रोगयुक्त शरीरवाली, विकराल दांतोंवाली, शोभारहित और मनुष्यों से विरोध करनेवाली होती है ॥ ४ ॥

अथ पंचम भावस्थितसूर्यफलम् ।

सुताश्रितः स्वल्पसुतां प्रसूते
नारीप्रधानां व्रतसंयुतां च ।
स्थूलास्यदन्तां पितृमातृ भक्तां
प्रियंवदां ब्राह्मणसम्मतां च ॥ ५ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय पांचवें स्थान में सूर्य स्थित हो, तो वह स्त्री थोड़ी संतानवाली, स्त्रियों में प्रधान, व्रत-नियम से रहनेवाली, स्थूल मुख और दांतोंवाली, पिता-माता में भक्ति रखनेवाली, प्यारी वाणी बोलनेवाली तथा ब्राह्मणों से सहमत होती है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावस्थितसूर्यफलम् ।

षष्ठे दिनेशः कुरुते प्रगल्भां
हतारिपक्षां वनितां विदग्धाम् ।
प्रशान्तचर्य्यां प्रियधर्मकृत्यां
धर्मानुरक्तां सुभगां सुरूपाम् ॥ ६ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय छठे स्थान में सूर्य बैठा हो, तो वह स्त्री ढीठ, शत्रुदल को नाश करनेवाली, स्त्रियों में चतुर, शांत स्वभाववाली, धर्मकार्य में प्रेम और रुचि रखनेवाली और रूपवती होती है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितसूर्यफलम् ।

सूर्येऽस्तसंस्थे पतिभावमुक्ता
नारी भवेत्सर्वसुखैर्विमुक्ता ।
सदैव रौद्रा प्रणयेन हीना
कफाश्रया किल्बिषिणी कुरूपा ॥ ७ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय सातवें स्थान में सूर्य बैठा हो, तो वह स्त्री पतिभाव से रहित, सम्पूर्ण सुखों से हीन, हमेशा क्रोधित रहनेवाली, प्रेमरहित, कफप्रकृति, पापिनी और खोटे रूपवाली होती है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितसूर्यफलम् ।

सूर्योऽष्टमस्थानगतः प्रसूते
दारिद्र्यदुःखान्वितबन्धुगोत्राम् ।

नारीं कुधर्मान्वितसर्वकृत्यां
विषादयुक्तां क्षतजार्दितांगीम् ॥ ८ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय आठवें घर में सूर्य बैठा हो, तो वह स्त्री दारिद्रय और दुःख से पीड़ित अपने गोत्री भाइयों से युक्त, अधर्मयुक्त, खोटे कर्म करनेवाली, विषाद और घाव-युक्त शरीरवाली होती है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितसूर्यफलम् ।

धर्मस्थितो वासरपः प्रसूते
नारीं कुधर्मां प्रियसाहसां च ।
भाग्यैर्विहीनां बहुशत्रुपक्षां
प्रभूतरोगां विभवैर्विहीनाम् ॥ ९ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय नवयें स्थान में सूर्य बैठा हो, तो वह स्त्री अधर्मप्रिय, साहसी, भाग्यहीन, बहुत शत्रुओंवाली, रोगों से युक्त और वैभवहीन होती है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितसूर्यफलम् ।

कर्माश्रितो वासरपः प्रसूते
कुकर्मरक्तां वनितां सदैव ।
प्रभावहीनां शिथिलां स्वकृत्ये
स्वभावकृच्छ्राभ्यधिकां नितान्तम् ॥ १० ॥

जिस स्त्री के दशवें स्थान में सूर्य बैठा हो, तो वह स्त्री कुकर्मिणी, प्रभाव से रहित, अपने कामों में शिथिल और स्वभावतः बहुत दुष्ट होती है ॥ १० ॥

अथ लाभस्थानस्थितसूर्यफलम् ।

लाभाश्रितः संकुरुते दिनेशो
नारीं सलाभां बहुपुत्रपौत्राम् ।
जितेन्द्रियां सर्वकलासु दक्षां
क्षमान्वितां बांधवपूजितां च ॥ ११ ॥

जिस स्त्री के ग्यारहवें स्थान में सूर्य बैठा हो, तो वह स्त्री बहुत लाभ सहित, पुत्र-पौत्रोंवाली, इन्द्रियों को जीतनेवाली, सर्व कलाओं में चतुर, क्षमायुक्त तथा बांधवों से प्रशंसित होती है ।। ११ ।।

अथ द्वादशभावस्थितसूर्यफलम् ।

असद्व्यया द्वादशगे दिनेशे
नारी प्रसूता विनयेन हीना ।
बहुव्यया पानरता नृशंसा
सर्वाशया शौचविवर्जिताङ्गी ॥ १२ ॥

जिस स्त्री के बारहवें स्थान में सूर्य बैठा हो, तो वह स्त्री खोटे कर्म में धन खर्च करनेवाली, नम्रतारहित, बहुत खर्च करनेवाली मद्यपान में तत्पर, क्रूर स्वभाव, भक्ष्याभक्ष्य खानेवाली और पवित्रतारहित होती है ।। १२ ।।

इति सूर्यभावफलम् ।

—:०:—

अथ तनुभावस्थितचन्द्रफलम् ।

चन्द्रो विलग्ने यदि शुक्लपक्षे
नारीं प्रसूतेऽतिस्वरूपगात्राम् ।
कृष्णे कृशां दीनतरां सरोगां
विवादशीलां सततं कुचैलाम् ॥ १३ ॥

जिस स्त्री के लग्न में शुक्लपक्ष का चन्द्रमा बैठा हो, तो वह स्त्री अत्यन्त रूपयुक्त शरीरवाली होती है और जो कृष्णपक्ष का चन्द्रमा स्थित हो, तो वह स्त्री दीन, रोगयुक्त, झगड़ा करनेवाली और मलिन वस्त्रोंवाली होती है ॥ १३ ॥

अथ द्वितीयभावस्थितचन्द्रफलम् ।

धनाश्रितः शीतकरः प्रसूते
प्रभूतवित्तां प्रणयप्रधानाम् ।
धर्मानुकूलां पतिकृत्यदक्षां
नयाधिकां ब्राह्मणदेवभक्ताम् ॥ १४ ॥

जिस स्त्री के दूसरे स्थान में जन्म समय चन्द्रमा बैठा हो, तो वह स्त्री बहुत धनवाली, नम्र स्वभाववाली, धर्मानुसार स्वामी की सेवा करनेवाली, नीतिपरायणा और देवता-ब्राह्मणों की भक्ता होती ॥ १४ ॥

अथ तृतीयभावस्थितचन्द्रफलम् ।

चन्द्रस्तृतीये कफवातसारां
नारीं प्रसूतेऽतिकठोरवाक्याम् ।

क्रुत्संस्थितां नीतिविवर्जितां च
स्वभावदुष्टां कृपणां कृतघ्नाम् ॥ १५ ॥

जिस स्त्री के तीसरे घर में जन्म समय चन्द्रमा बैठा हो, तो वह स्त्री कफ-वातादि रोगवाली, कठोर वचन बोलनेवाली, क्रोधयुक्त, नीतिहीन, दुष्टस्वभाव, कृपण और कृतघ्न होती है ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितचन्द्रफलम् ।

चन्द्रः सुखस्थो बहुसौख्ययुक्तां
नारीं प्रसूतेऽद्भुतभूषणां च ।
स्थिरस्वभावा श्रुतधर्मकृत्यां
भोगाधिकां देवगुरुप्रसक्ताम् ॥१६॥

जिस स्त्री के जन्म समय चौथे घर में चन्द्रमा बैठा हो, तो वह स्त्री बहुत सौख्यसंपन्न, अद्भुत आभूषण धारण करने, वाली, स्थिर स्वभाव, वेदधर्म माननेवाली, अधिक भोगोंवाली तथा देवता और ब्राह्मणों में आसक्त होती है ॥ १६ ॥

अथ पंचमभावस्थितचन्द्र फलम् ।

सुताश्रितः शीतकरः सुपुत्रां
करोति नारीं गुणगौरवाढ्याम् ।
प्रभूतभृत्यां सुतसौख्ययुक्तां
धनान्वितां सद्व्यवहारशीलाम् ॥ १७ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय पांचवें स्थान में चन्द्रमा बैठा हो, तो

वह स्त्री अच्छे पुत्रों से युक्त, गुण-गौरवतायुक्त, बहुत से नौकरों-वाली पुत्रसुखसंपन्न, धनवती तथा अच्छे व्यवहारवाली होती है ॥ १७ ॥

अथ षष्ठभावस्थितचन्द्रफलम् ।

चन्द्रोऽरिसंस्थः कुरुतेऽल्पवित्तां
प्रभूतवैरां विनयेन हीनाम् ।
चलस्वभावां क्षतसर्वगात्रां
पतिप्रयुक्तामनिशं सुरूपाम् ॥ १८ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय छठे घर में चन्द्रमा स्थित हो, तो वह स्त्री थोड़े धनवाली, बहुत वैरियोंवाली, नम्रतारहित, चलायमान स्वभाववाली, पति द्वारा सब शरीर में घावों से युक्त और सुन्दर रूपवाली होती है ॥ १८ ॥

अथ सप्तमभावस्थितचन्द्रफलम् ।

चन्द्रोऽस्तसंस्थः कुरुते विदग्धां
पतिप्रियां धर्मविवेकयुक्ताम् ।
सुचारुवाचं विभवैः समेतां
तेजोन्वितां पुण्यपरां सुसत्याम् ॥ १९ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय में चन्द्रमा सातवें घर में बैठा हो, तो वह स्त्री चतुर, पति को प्यारी, धर्म और विवेकयुक्त, अच्छी वाणी बोलनेवाली, वैभव और तेज से युक्त तथा पुण्य और सत्य में तत्पर होती है ॥ १९ ॥

अथाष्टमभावस्थितचन्द्रफलम् ।

चन्द्रोऽष्टमस्थः कुरुते नृशंसां
नारीं कुनेत्रां कुकुचां कुयोनिम् ।
विहीनवेषाभरणां सरोगां
नितांतमत्यद्भुतगर्हणां च ॥ २० ॥

जिस स्त्री के जन्म समय आठवें स्थान में चन्द्रमा बैठा हो, तो वह स्त्री क्रूरस्वभाव, बुरे नेत्रवाली, बुरे कुच तथा योनि वाली, रूप और आभरणहीन, रोगसहित और अत्यन्त निन्दित कर्म करनेवाली होती है ॥ २० ॥

अथ नवमभावस्थितचन्द्रफलम् ।

धर्माश्रितः शीतकरः प्रसूते
प्रभूतधर्मां वनितां विदग्धाम् ।
भाग्याधिकां कल्पतमां मनोज्ञां
सुभृत्यपुत्रां च सुभूरिसौख्याम् ॥ २१ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय नवयें स्थान में चन्द्रमा बैठा हो, तो वह स्त्री बहुत धर्म करनेवाली, चतुर, भाग्यशालिनी, प्रशंसायोग्य रूपवाली, मनोहर, अच्छे नौकर तथा पुत्रोंवाली और बहुत सुखवाली होती है ॥ २१ ॥

अथ दशमभावस्थितचन्द्रफलम् ।

कर्माश्रितः शीतकरः प्रसूते
प्रभूतहेमद्रविणां प्रसिद्धाम् ।

नारींनिरीहां कुलसर्वमुख्यां
त्यागान्वितां पुण्यपरां सुसत्याम्॥ २२ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय दशवें स्थान में चन्द्रमा बैठा हो, तो वह स्त्री बहुत सुवर्ण और धन से युक्त, लोक में प्रसिद्ध, इच्छारहित, अपने कुल में सबसे मुख्य, त्यागयुक्त, पुण्यशील और सत्यवादिनी होती है ॥ २२ ॥

अथ लाभस्थानस्थितचन्द्रफलम् ।

लाभाश्रितः शीतकरः सलाभां
भव्यां विधिज्ञां कुरुते सुदात्रीम् ।
नारीं प्रसन्नां प्रणयेन युक्तां
दानान्वितां रोगविवर्जिताङ्गीम्॥ २३ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय ग्यारहवें घर में चन्द्रमा बैठा हो, तो वह स्त्री लाभसहित, प्रकाशवती, विधियों की जानने-वाली, दानशील, प्रसन्न, नम्रतायुक्त, दान करनेवाली तथा रोगरहित होती है ॥ २३ ॥

अथ व्ययभावस्थितचन्द्रफलम् ॥

करोति चन्द्रो व्ययगो व्ययाढ्यां
गतप्रभावां वनितां सुतीव्राम् ।
दीनां नतां नीतिविवर्जितां च
क्षमाविहीनां सरुजां सदैव ॥ २४ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय बारहवें घर में चन्द्रमा बैठा हो, तो वह स्त्री खर्च करनेवाली, प्रभावरहित, कठोर स्वभाववाली, दीन, नम्र, नीतिरहित, क्षमारहित तथा सदा रोगयुक्त होती है ॥ २४ ॥

इति चन्द्रभावफलम् ।

—:०:—

अथ तनुभावस्थितभौमफलम् ।

लग्नाश्रितो भूतनयः प्रसूते
नारीं महारक्तसुदुःखिताङ्गीम् ।
गतप्रभावां पतिना निरस्तां
सुदुर्भगां गर्वसमन्वितां च ॥ २५ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय लग्न में मंगल बैठा हो, तो वह स्त्री रक्तविकार से दुःखित शरीरवाली, प्रभावरहित, पति से परित्यक्त, दुष्ट भाग्यवाली तथा अभिमानयुक्त होती है ॥ २५ ॥

अथ धनभावस्थितभौमफलम् ।

धनाश्रितो भूतनयो विशाल-
धनेन हीनां कुरुते कुकान्ताम् ।
पराधिकां कामपरां सरोगां
क्लेशाधिकां केशविवर्जितां च ॥ २६ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय धनभाव में मंगल बैठा हो, तो वह स्त्री विशाल धन से हीन, खोटी, पराश्रित, विषयासक्त, रोगवती, अधिक क्लेशोंवाली तथा केशविहीन होती है ॥२६॥

अथ तृतीयभावस्थितभौमफलम् ।

तृतीयसंस्थः कुरुते कुपुत्रां
नारीं नितांतं सुभगां सुशीलाम् ।
बंधुप्रियां साधुरतां प्रशस्तां
विहीनरोगां प्रथितप्रभावाम् ॥ २७ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय तीसरे घर में मंगल बैठा हो, तो वह स्त्री खोटे पुत्रोंवाली, अत्यन्त श्रेष्ठ भाग्यवाली, उत्तम शील-वाली, भाइयों को प्यारी, साधुओं की सेवा में तत्पर, शोभाय-मान, रोग रहित और प्रख्यात प्रभाववाली होती है ॥२७॥

अथ चतुर्थभावस्थितभौमफलम् ।

चतुर्थगो भूतनयः प्रसूते
नारीं हताशां हृतकर्मकृत्याम् ।
सौख्येन हीनामधनां विशीलां
जनैर्निरस्तां सततं सरोषाम् ॥ २८ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय चौथे घर में मंगल बैठा हो, तो वह स्त्री असफल मनोरथवाली, धर्म-कर्म-विहीन, सुखरहित, निर्धन, शीलरहित, मनुष्यों से परित्यक्त तथा सदा क्रोधयुक्त रहती है ॥२८॥

अथ पंचमभावस्थितभौमफलम् ।

सुताश्रितो भूतनयः प्रसूते
नारीं कुपुत्रां कृपया विहीनाम् ।

कुसंमतिं पापविधानरक्तां
श्रुतेन हीनां हतबंधुवर्गाम् ॥ २६ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय पांचवें घर में मंगल बैठा हो, तो वह स्त्री दुष्टपुत्रोंवाली, कृपारहित, दुष्टसंगिनी, पापकर्म करनेवाली, वैदिककर्म से हीन तथा नष्ट भाईबन्धुओंवाली होती है ॥२६॥

अथ षष्ठभावस्थितभौमफलम् ।

रिपुस्थितो भूतनयः प्रसूते
नारीं सनाथां हतशत्रुपक्षाम् ।
प्रभूतकेशां सुजनानुरक्तां
विद्याधिकां रोगविवर्जितां च ॥३०॥

जिस स्त्री के जन्मसमय छठे स्थान में मंगल बैठा हो, तो वह स्त्री पति से युक्त, शत्रुओं को नाश करनेवाली, सघन केशोंवाली, सज्जनों से प्रेम रखनेवाली, अधिक विद्यावाली और रोगरहित होती है ॥३०॥

अथ सप्तमभावस्थितभौमफलम् ।

अस्ते स्थितो वै धरणीसुतस्तु
बाल्ये प्रसूते विधवां च नारीम् ।
दुष्टस्वभावां विभवेन हीनां
कुत्सिताङ्गीं गुणवर्जितां च ॥ ३१ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय सातवें घर में मंगल बैठा हो, तो वह स्त्री बाल्यकाल में ही विधवा होनेवाली, दुष्ट स्वभाववाली, वैभवहीन, बेढंग शरीरवाली और गुणों से रहित होती है ॥३१॥

अथाष्टमभावस्थितभौमफलम् ।

मृतिस्थितो भूमिसुतः प्रसूते
प्रभूतरोगां सुकृशां विनाथाम् ।
दरिद्रदुःखां कृतशोकभाजां
हिंसाधिकां कान्तिविवर्जितां च ॥ ३२ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय आठवें घर में मंगल बैठा हो, तो वह स्त्री बहुत रोगिणी, दुर्बलाङ्गी, पति-रहित, दरिद्र और दुःख की भोगनेवाली, शोकसंतप्त, हिंसा करनेवाली और शोभाहीन होती है ॥३२॥

अथ नवमभावस्थितभौमफलम् ।

धर्माश्रितो भूतनयो विधर्मां
करोति नारीं सुमुखां सरोगाम् ।
भाग्यैर्विहीनां स्वजनैर्निरस्तां
प्रियामिषां पानपरां सदैव ॥ ३३ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय नवम घर में मंगल बैठा हो, तो वह स्त्री विधर्मिणी, सुन्दर मुखवाली, रोगयुक्त, भाग्यहीन स्वजनों से त्यागी हुई तथा मांस और मद्य का सेवन करनेवाली होती है ॥३३॥

अथ दशमभावस्थितभौमफलम् ।

कर्माश्रितो भूतनयः प्रसूते
नारीं कुकर्मश्रवणां कुभावाम् ॥

शीलेन हीनां नितरां विधर्मां
लज्जाविहीनां मतिवर्जितां च ॥ ३४ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय दशम घर में मंगल बैठा हो, तो वह स्त्री कुकर्म करनेवाली, खोटे कानोंवाली, खराब स्वभाव-वाली, शीलरहित, बेधर्म लज्जाविहीन और बुद्धिरहित होती है ॥३४॥

अथ लाभभावस्थितभौमफलम् ।

लाभाश्रितस्संकुरुते महीजः
प्रभूतलाभां वनितां निरीहाम् ।
शुभस्वभावां विविधोपचारा-
मम्बारतां प्रीतिपरां च धर्मे ॥ ३५ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय ग्यारहवें घर में मंगल बैठा हो, तो वह स्त्री अधिक लाभवाली, इच्छारहित, अच्छे स्वभाव-वाली, अनेक प्रकार की सामग्रियों से युक्त, माता में तथा अपने धर्म में प्रीति करनेवाली होती है ॥३५॥

अथ व्ययभावस्थितभौमफलम् ।

व्ययस्थितो भूतनयः प्रसूते
नारीं कृतघ्नां गुणवर्जिताङ्गीम् ।
असद्व्ययां पानपरां नृशंसां
सदातुरां प्रीतिविवर्जितां च ॥ ३६ ॥

जिस स्त्री के बारहवें घर में मंगल बैठा हो, तो वह स्त्री अहसान न माननेवाली, गुणरहित, खोटे काम में धन खर्च करनेवाली, मद्यपान में रत, निर्दय, सदा आतुर रहनेवाली और प्रीतिरहित होती है ॥ ३६ ॥

इति भौमफलम् ।

अथ तनुभावस्थितबुधफलम् ।

करोति सौम्यस्तनुगः सुरूपां
प्रीतिप्रधानां नयधर्मयुक्ताम् ।
विशालनेत्रां प्रचुरान्नपानां
प्रियंवदां सत्यसमन्वितां च ॥ ३७ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय पहले घर में बुध बैठा हो, तो वह स्त्री सुन्दर रूपवाली, प्रीति और नीतिधर्म में निपुण, बड़े नेत्रोंवाली, अधिक अन्न और पानादियुक्त, प्यारी वाणी और सत्यवचन बोलनेवाली होती है ॥ ३७ ॥

अथ धनभावस्थितबुधफलम् ।

धनस्थितः सोमसुतः प्रसूते
धनान्वितां शुद्धियुतां सुरूपाम् ।
नारीं द्विजाराधनतत्परां च
ऋतुप्रियां श्रीसहितां गुणाढ्याम् ॥ ३८ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय दूसरे घर में बुध बैठा हो, तो वह स्त्री धनवती, शुद्ध, सुन्दर रूपवाली, ब्राह्मणों की सेवा में तत्पर, यज्ञ करनेवाली, लक्ष्मीसंपन्न और गुणवती होती है ॥ ३८ ॥

अथ तृतीयभावस्थितबुधफलम् ।

तृतीयगः सोमसुतो धनाढ्यां
नारीं प्रसूते सुतमानभाजम् ।
जनानुकूलां प्रभुतासमेतां
बन्धुप्रियां त्राणयुतां सुभासम् ॥ ३९ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय तीसरे घर में बुध बैठा हो, तो वह स्त्री धनवती, पुत्रों से मान पानेवाली, मनुष्यों की आज्ञानुसार चलनेवाली, ऐश्वर्यवाली, भाइयों को प्यारी, रक्षायुक्त तथा शोभायमान होती है ॥ ३९ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितबुधफलम् ।

सौम्यः सुखस्थः सुसुखां प्रसूते
नतां प्रभूतैः सुजनैः सुभृत्यैः ।
देवद्विजाराधनतत्परां च
प्रख्यातवंशां प्रियधर्मवर्णाम् ॥ ४० ॥

जिस स्त्री के जन्म समय चौथे घर में बुध बैठा हो, तो वह स्त्री सुखसहित, बहुत मन्त्र, अपने जनों और नोकरों को प्रसन्न करनेवाली, देवता और ब्राह्मणों की आराधना में तत्पर, विख्यात वंशवाली तथा अपने वर्णधर्म को प्रिय माननेवाली होती है ॥ ४० ॥

अथ पंचमभावस्थितबुधफलम् ।

सुतस्थितः सोमसुतोऽल्पपुत्रां
स्वल्पान्नवित्तां कलहप्रियां च ।
वृथाटनां गर्हितसर्वकृत्यां
लक्ष्म्या विहीनां हतसाधुपक्षाम् ॥ ४१ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय पांचवें घर में बुध बैठा हो, तो वह स्त्री थोड़े पुत्रोंवाली, थोड़ा अन्न और धनवाली, कलह-कारिणी, वृथा भ्रमण करनेवाली, निंदित काम करनेवाली लक्ष्मी रहित और साधुओं से विमुख होती है ॥ ४१ ॥

अथ षष्ठभावस्थितबुधफलम् ।

सौम्योरिपुस्थो हतशत्रुपक्षां
नारीं प्रसूते विभवैः समेताम् ।
गतायुषं तीव्रकरां सुकामां
परोपकारव्यसनाभिसक्ताम् ॥ ४२ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय छठे घर में बुध बैठा हो, तो वह स्त्री शत्रुपक्ष को नाश करनेवाली, वैभवसंपन्न, अल्पआयुष-वाली और बड़े हाथोंवाली, सुन्दर मनोरथोंवाली, परोप-कारिणी तथा व्यसनासक्त होती है ॥ ४२ ॥

अथ सप्तमभावस्थितबुधफलम् ।

सौम्यः कलत्रे प्रवरां विदग्धां
शास्त्रानुरक्तां शुभभर्तृकां च ।

करोति नारीं नियमैरुपेतां
शुभप्रभावां प्रणयान्वितां च ॥ ४३ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय सातवें घर में बुध बैठा हो, तो वह स्त्री श्रेष्ठस्वभाव, चतुर, शास्त्रानुसार चलनेवाली, श्रेष्ठ-पतिवाली, नियमों से युक्त, श्रेष्ठ स्वभाववाली तथा नम्रता-सहित होती है ॥ ४३ ॥

अथाष्टमभावस्थितबुधफलम् ।

मृत्युस्थितः सोमसुतः कृतघ्नां
नारीं प्रसूते विगताभिमानाम् ।
निरस्तधर्मां जनसंविरुद्धां
सदातुरां भीतिसमन्वितां च ॥ ४४ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय आठवें घर में बुध बैठा हो, तो वह स्त्री कृतघ्न, अभिमानरहित, धर्मरहित, आपस के लोगों से विरोध रखनेवाली, हमेशा आतुर रहनेवाली और भयभीत होती है ॥ ४४ ॥

अथ नवमभावस्थितबुधफलम् ।

धर्माश्रितः सोमसुतः सुकर्मां
पतिप्रधानां वनितां प्रसूते ।
प्रभूतकोशां विनयान्वितां च
सुवर्णभूषां व्रतदानयुक्ताम् ॥ ४५ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय नवयें घर में बुध बैठा हो, तो वह स्त्री अच्छे कर्म करनेवाली, पतिप्रिया, ऐश्वर्यशालिनी, विनम्र, सुवर्ण के आभूषण पहननेवाली, और व्रत-दान से युक्त होती है ।। ४५ ।।

अथ दशमभावस्थितबुधफलम् ।

कर्माश्रितः सोमसुत सुधर्मा
धन्यां प्रसूते वनितां विनीताम् ।
भाग्याधिकां कीर्तिपरां सुदक्षां
क्षमाधिकां सत्यसमन्वितां च ॥ ४६ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय दशवें घर में बुध बैठा हो, तो वह स्त्री धर्मचारिणी, माननीय, नम्र, भाग्यशालिनी, कीर्ति-युक्त, सुचतुर, सहनशील और सत्यवादिनी होती है ।। ४६ ।।

अथ लाभभावस्थितबुधफलम् ।

लाभाश्रितः सोमसुतः प्रसूते
नारीं प्रभूतप्रियपुष्टचित्ताम् ।
सुलाभयुक्तां शुभशीलभाजं
पतिव्रतां बांधवसंमतां च ॥ ४७ ॥

जिस स्त्री के ग्यारहवें घर में बुध बैठा हो, तो वह स्त्री बहुतों को प्रिय, पुष्ट विचारोंवाली, अच्छे लाभयुक्त, शीलवती, पतिव्रता और भाइयों से सहमत होती है ।। ४७ ।।

अथ व्ययभावस्थितबुधफलम् ।

व्ययाश्रितः सोमसुतः प्रसूते
नारीमलक्ष्मीं विगतप्रतापाम् ।
विवादशीलां विकलां कृशाङ्गीं
गुरोर्वियुक्तां सुजनैर्निरस्ताम् ॥ ४८ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय बारहवें घर में बुध बैठा हो, तो वह स्त्री लक्ष्मीरहित, प्रतापरहित, विवाद करनेवाली, विकल, दुर्बल शरीर, गुरुजनों से पृथक् रहनेवाली और स्वजनों से त्यागी हुई होती है ॥ ४८ ॥

इति बुधफलम् ।

अथ तनुभावस्थितगुरुफलम् ।

लग्नाश्रितो देवगुरुः प्रसूते
सुसत्ययुक्तां सुमनोज्ञभोगाम् ।
गंभीरवाक्यां प्रियसाधुपक्षां
सुरूपगात्रां प्रमदोत्तमां च ॥ ४९ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय लग्न में बृहस्पति स्थित हो, तो वह स्त्री सत्यवादिनी, ऐश्वर्यशालिनी, गंभीर वाणी बोलनेवाली, साधुभक्ता, श्रेष्ठ रूप और शरीरवाली स्त्रियों में उत्तम होती है ॥ ४९ ॥

अथ धनभावस्थितगुरुफलम् ।

धनस्थितो देवगुरुः प्रसूते
प्रभूतवित्तां सुभगां मनोज्ञाम् ।
सुधर्मिणीं नीतिपरां प्रधानां
गतस्पृहां स्वर्णविभूषणाढ्याम् ॥ ५० ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय दूसरे घर में बृहस्पति बैठा हो, तो वह स्त्री बहुत धनवाली, श्रेष्ठ भाग्यवाली, मनोहारिणी, धर्मनिष्ठ, न्यायप्रिय, नारियों में प्रधान, इच्छारहित और सुवर्ण के आभूषणों से सुसज्जित रहनेवाली होती है ॥५०॥

अथ तृतीयभावस्थितगुरुफलम् ।

तृतीयसंस्थः कुरुते सुरेज्यो
नारीं नितान्तं विहतप्रभावाम् ।
सुदोषयुक्तां गुरुताविहीनां
विवर्जितांगीं निधनां सदैव ॥ ५१ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय तीसरे घर में बृहस्पति बैठा हो, तो वह स्त्री अत्यन्त प्रभावरहित, अनेक दोषयुक्त, गौरवतारहित अंगहीन और धनरहित होती है ॥ ५१ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितगुरुफलम् ।

चतुर्थसंस्थः कुरुते सुरेज्यो
नारीं प्रसन्नां सुखवित्तयुक्ताम् ।

प्रभूतविद्याभरणां प्रसिद्धां
सुपूजिताङ्गीं गुणगौरवां च ॥ ५२ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय चौथे घर में बृहस्पति बैठा हो, तो वह स्त्री प्रसन्नचित्त, सुख और धनसहित, बहुत विद्या और आभरणों से युक्त, प्रसिद्ध, पूजनीय अंगोंवाली तथा गुण-गरिमा से संपन्न होती है ॥ ५२ ॥

अथ पंचमभावस्थितगुरुफलम् ।

सुतस्थितो देवगुरुः सुपुत्रां
नारीं प्रसूते हतपापकृत्याम् ।
सदानुकूलां व्रतधर्मदक्षां
सत्यात्मिकां रम्यसभासुभव्याम् ॥ ५३ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय पाँचवें घर में बृहस्पति बैठा हो, तो वह स्त्री श्रेष्ठ पुत्रोंवाली, पापकर्म रहित, सदा अनुकूल स्वभाव-वाली व्रत और धर्म में संलग्न, सत्यवादिनी तथा सभा-सोसाइटियों में बोलनेवाली होती है ॥ ५३ ॥

अथ षष्ठभावस्थितगुरुफलम् ।

जीवोऽरिसंस्थो बहुशत्रुपक्षां
नारीं सुधत्ते नयसंयुतां च ।
बह्वापदं त्राससमन्विताङ्गीं
प्रधानदर्पां कृतकोपबाणाम् ॥ ५४ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय छठे घर में बृहस्पति बैठा हो, तो वह स्त्री बहुत से शत्रुओंवाली, नीतिप्रिय, बहुत आपत्ति और त्रासयुक्त शरीरवाली, दर्पयुक्त और कोपिनी होती है ॥५४॥

अथ सप्तमभावस्थितगुरुफलम् ।

कलत्रगो देवगुरुः प्रसूते
स्वभावयुक्तां प्रमदां सुपुण्याम् ।
जनानुरक्तां बहुशास्त्रभाजं
पतिप्रियां कीर्तिसमन्वितां च ॥ ५५ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय सातवें घर में बृहस्पति बैठा हो, तो वह स्त्री श्रेष्ठ स्वभाववाली, पुण्य कार्य करनेवाली, आत्मीयजनों से प्रेम करनेवाली, शास्त्रानुसार चलनेवाली, पति को प्यारी और कीर्तियुक्त होती है ॥ ५५ ॥

अथाष्टमभावस्थितगुरुफलम् ।

जीवोऽष्टमस्थः कुरुतेऽल्पसत्यां
नारीं विशीलां पतिना विमुक्ताम् ।
स्थूलांघ्रिहस्तां व्यसनप्रधानां
बह्वाशनां रोगसमन्वितां च ॥ ५६ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय आठवें घर बृहस्पति बैठा हो, तो वह स्त्री असत्यवादिनी, शीलरहित, पति से त्यागी हुई, मोटे पैर और हाथोंवाली, व्यसनवालियों में प्रधान, बहुत भोजन करनेवाली और रोगिणी होती है ॥ ५६ ॥

अथ नवमभावस्थितगुरुफलम् ।

जीवे तपस्थेऽमररूपयुक्ता
तडागवृक्षोऽन्वयधर्मकृत्या ।
रम्या प्रशस्ता द्विजभक्तियुक्ता
महाधनानां च निधिः कृतज्ञा ॥ ५७ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय नवें घर में बृहस्पति बैठा हो, तो वह स्त्री देवस्वरूपा, तालाब खोदवाने और बाग लगवाने आदि धर्मकार्यों की करनेवाली, शोभायमान, सुन्दर, ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर, ऐश्वर्यशालिनी और कृतज्ञ होती है ॥५७॥

अथ दशमभावस्थितगुरुफलम् ।

कर्माश्रितो देवगुरुः प्रसूते
प्रख्यातकर्मां सगुणां गुणज्ञाम् ।
प्रभूतदासीं विनयप्रगल्भां
नारीं तथैवाद्भुतचेष्टितां च ॥ ५८ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय दशवें घर में बृहस्पति बैठा हो, तो वह स्त्री अपने कार्यों द्वारा प्रसिद्ध होनेवाली, गुणों की जाननेवाली, बहुत दासियों से युक्त, नम्र, प्रगल्भ और अद्-भुत व्यापार करनेवाली होती है ॥ ५८ ॥

अथ लाभभावस्थितगुरुफलम् ।

लाभाश्रितो देवगुरुः प्रसूते
नारीं सुदात्रीं बहुकीर्तियुक्ताम् ।

श्रेयोन्वितां शिल्पपरां सुसत्यां
सदानुरक्तां गुणकीर्तनेन ॥ ५६ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय ग्यारहवें घर में बृहस्पति बैठा हो, तो वह स्त्री दानशील, बहुत कीर्तिवाली, कल्याणयुक्त, चित्रकारी करनेवाली और सत्यवादिनी तथा गुणों के कीर्तन में सदा तत्पर होती है ॥ ५६ ॥

अथ व्ययभावस्थितगुरुफलम् ।

व्ययाश्रितो देवगुरुः प्रसूते
साधुव्ययां रोगसमन्विताङ्गीम् ।
लाभाभिभूतां कुलधर्महीनां
निसर्गदुष्टां परधर्मपक्षाम् ॥ ६० ॥

जिस स्त्री के जन्म समय बारहवें घर में बृहस्पति बैठा हो, तो वह स्त्री सद्व्यय करनेवाली, रोगिणी, लाभयुक्त, अपने कुलधर्म से हीन, स्वभाव से दुष्ट तथा दूसरों के धर्म और पक्षवाली होती है ॥ ६० ॥

इति गुरुफलम् ।

अथ तनुभावस्थितभृगुफलम् ।

लग्नाश्रितो दैत्यगुरुः प्रसूते
नारीं सुकांतां सुभगां विदग्धाम् ।

वित्ताधिकां दोषविवर्जिताङ्गीं
हतारिपक्षां सततं सुशीलाम् ॥ ६१ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय लग्न में शुक्र बैठा हो, तो वह स्त्री सुन्दर पतिवाली, ऐश्वर्यशालिनी, चतुर, धनवती, दोष-रहित शरीरवाली, शत्रुपक्ष को नाश करनेवाली और सुशील होती है ॥ ६१ ॥

अथ द्वितीयभावस्थितभृगुफलम् ।

शुक्रो धनस्थः सधनां प्रसूते
विदग्ध चेष्टां प्रमदां सुरूपाम् ।
धर्मध्वजां धर्मपरां सुधन्यां
विख्यातकृत्यां मृदुभाषिणीं च ॥ ६२ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय दूसरे घर में शुक्र बैठा हो, तो वह स्त्री धनवती, चतुर चेष्टावालीं, रूपवती, धर्म-कर्म में तत्पर, माननीय, अपने कार्यों से विख्यात और मीठी वाणी बोलनेवाली होती है ॥ ६२ ॥

अथ तृतीयभावस्थितभृगुफलम् ।

तृतीयगो दैत्यगुरुः प्रसूते
नारीं सुकृत्यां विनयैः समेताम् ।
युक्तामनेकैः सुसहोदरैश्च
सहोदरीभिश्च तथोत्तमाभिः ॥ ६३ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय तीसरे घर में शुक्र बैठा हो, तो वह स्त्री श्रेष्ठ कर्मों में तत्पर, नम्रतायुक्त, अनेक भाइयों तथा उत्तम बहनोंवाली होती है ॥६३॥

अथ चतुर्थभावस्थितभृगुफलम् ।

चतुर्थगो दैत्यगुरुः प्रसूते
प्रभूतसौख्यां वनितां धनाढ्याम् ।
विलासशीलां परधर्मकृत्यां
जितेन्द्रियां वंशविभूषणां च ॥ ६४ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय चौथे घर में शुक्र बैठा हो, तो वह स्त्री बहुत सौख्यवाली, धनवती, विलासवती, पराये धर्म को करनेवाली, इन्द्रियों को जीतनेवाली और अपने वंश में आभूषणरूप होती है ॥६४॥

अथ पंचमभावस्थितभृगुफलम् ।

शुक्रः सुतस्थः प्रकरोति नारीं
साध्वीं समृद्धां बहुकन्यकाढ्याम् ।
रम्यानुकारां खलु संगहीनां
नित्यं प्रधानां निजवंशमध्ये ॥ ६५ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय पाँचवें घर में शुक्र बैठा हो, तो वह स्त्री सदाचारिणी, सम्पत्तिशालिनी, बहुत कन्याओंवाली, मनोहारिणी, संगहीन और अपने वंश में प्रधान होती है ॥६५॥

अथ षष्ठभावस्थितभृगुफलम् ।

शुक्रोऽरिसंस्थः प्रकरोति नारी-
मीर्ष्याप्रधानां बहुकोपयुक्ताम् ।
तीव्रस्वभावां विजितारिपक्षां
सदा निरस्तां पतिपुत्रवर्गैः ॥ ६६ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय छठे घर में शुक्र बैठा हो, तो वह स्त्री ईर्ष्या करनेवाली, क्रोधवाली, उग्र स्वभाववाली, शत्रुदल को जीतनेवाली और पति, पुत्रादि से तिरस्कृत होती है ।।६६।।

अथ सप्तमभावस्थितभृगुफलम् ।

कलत्रगो दैत्यगुरुः प्रसूते
नारीं प्रभूतां द्रविणप्रभावाम् ।
पतिप्रियां शास्त्ररतां प्रगल्भां
हितां द्विजानां जनवल्लभां च ॥ ६७ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय सातवें घर में शुक्र बैठा हो, तो वह स्त्री अधिक धनवाली, पति को प्यारी, शास्त्रानुसार चलनेवाली, प्रगल्भा, ब्राह्मणों का हित करनेवाली और स्वजनों को प्यारी होती है ।।६७।।

अथाष्टमभावस्थितभृगुफलम् ।

शुक्रोऽष्टमस्थः कुरुते प्रमत्तां
विषादभाजं विभवैर्वियुक्ताम् ।

दयाविहीनां परवंचनार्ता
कुचैलिनीं धर्मविवर्जितां च ॥६८॥

जिस स्त्री के जन्म समय आठवें घर में शुक्र बैठा हो, तो वह स्त्री मतवाली, विषादयुक्त, वैभवहीन, दयाहीन, परवंचक, मलिन वस्त्र धारण करनेवाली और धर्मरहित होती है ॥६८॥

अथ नवमभावस्थितभृगुफलम् ।

धर्माश्रितो धर्मपरां प्रसूते
शुक्रः सुमुख्यां वनितां च लोके ।
नानार्थवस्त्राश्रयभोजनाढ्यां
सुपुष्टचित्तां पुरुषानुकाराम् ॥ ६९ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय नवम घर में शुक्र बैठा हो, तो वह स्त्री धर्माचरण करनेवाली, सब स्त्रियों में श्रेष्ठ, अनेक प्रकार के वस्त्र, धन, स्थान और भोजनों से युक्त, उदारचित्त और पुरुषों के से अंगोंवाली होती है ॥६९॥

अथ दशमभावस्थितभृगुफलम् ।

कर्माश्रितो दैत्यगुरुः प्रसूते
नारीं यशस्यां सुधनैः समेताम् ।
प्रसिद्धकर्मप्रतिपूजिताङ्गीं
रूपाधिकां कल्पतरां सुसत्याम् ॥ ७० ॥

जिस स्त्री के जन्म समय दशवें घर में शुक्र बैठा हो, तो वह स्त्री यश और धन-धान्य संपन्न, अपने कार्यों द्वारा प्रसिद्ध होनेवाली, समान योग्य, सुन्दर रूपवाली और सत्यवादिनी होती है ।।७०।।

अथ लाभभावस्थितभृगुफलम् ।

लाभाश्रितो दैत्यगुरुः प्रसूते
प्रभूतलाभां वनितां सदैव ।
विमुक्तदोषां च सुशास्त्ररक्तां
महाप्रभावां विविधालयां च ॥ ७१ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय ग्यारहवें घर में शुक्र बैठा हो, तो वह स्त्री बहुत लाभवाली, दोषों से रहित, शास्त्रों में अनुरक्त, बड़े प्रभाववाली और अनेक गृहोंवाली होती है ।।७१।।

अथ व्ययभावस्थितभृगुफलम् ।

व्ययाश्रितोऽसद्व्ययदुःखभाजं
नारीं प्रसूते भृगुजः सगर्वाम् ।
क्रोधाधिकां कृत्रिमवाक्यरक्तां
रोगान्वितां बुद्धिविहीनदुष्टाम् ॥ ७२ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय बारहवें घर में शुक्र बैठा हो, तो वह स्त्री फिजूलखर्ची से दुःख भोगनेवाली, घमंड करनेवाली, कोपिनी, बातें बनानेवाली, रोगिणी, बुद्धिहीन और दुष्टा होती है ।।७२।।

इतिभृगुभावफलम् ।

अथ तनुभावस्थितशनिफलम् ।

॥ करोति सौरः खलु लग्नसंस्थो
विरूपदेहां वनितां नितान्तम् ।
आमाधिकां कीर्तिविवर्जिताङ्गीं
स्थूलास्थिदन्तां नयनैर्विहीनाम् ॥ ७३ ॥

जिस स्त्री के लग्न में शनैश्चर बैठा हो, तो वह स्त्री बेढंगे शरीरवाली, आमातिसार रोगवाली, कीर्तिविहीन, मोटे हाड़ और दांतवाली और नेत्रहीन होती है ॥७३॥

अथ द्वितीयभावस्थितशनिफलम् ।

॥ धनाश्रितः सूर्यसुतः प्रसूते
धनेन हीनां वनितां निरस्ताम् ।
सदाविभूतां प्रणयेन हीनां
नृशंसभावामयसंकुलां च ॥ ७४ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय दूसरे घर में शनैश्चर बैठा हो, तो वह स्त्री धनहीन, स्वजनों से परित्यक्त, अपमानित, प्रणयव्यापारविहीन, खोटे भाववाली और रोगिणी होती है ॥७४॥

अथ तृतीयभावस्थितशनिफलम् ।

तृतीयसंस्थो रविजः प्रसूते
दक्षां प्रधानां वनितां सुधन्याम् ।

बहुप्रजां त्राणविधानसक्तां
प्रशंसितां साधुजनेन नित्यम् ॥ ७५ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय तीसरे घर में शनि बैठा हो, तो वह स्त्री चतुर, स्त्रियों में प्रधान और धन्य होती है तथा बहुत सन्तानवाली, अभयदात्री और हमेशा साधुजनों से प्रशंसित होती है ॥७५॥

अथ चतुर्थभावस्थितशनिफलम् ।

करोति मन्दः सुखगोऽल्पसौख्यां
मतिप्रहीणां वनितां कृतघ्नाम् ।
चलस्वभावां विभवैर्विहीनां
सदाहितां नीचसमागमां च ॥ ७६ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय चौथे घर में शनि बैठा हो, तो वह स्त्री अल्प सुखवाली, मतिहीन, कृतघ्न, चलायमान, स्वभाव, वैभवहीन, हमेशा अहित करनेवाली और नीच पुरुषों से संसर्ग रखनेवाली होती है ॥७६॥

अथ पंचमभावस्थितशनिफलम् ।

सुताश्रितो भास्करजो विपुत्रां
नारीं प्रसूते घृणया विहीनाम् ।
प्रभूतदर्पां गणिकानुकारां
विवर्जितां साधुसमागमेन ॥ ७७ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय पांचवें घर में शनि बैठा हो, तो

वह स्त्री पुत्रहीन, घृणारहित, अभिमानवाली, वेश्याओं कासा अनुकरण करनेवाली और साधुओं के समागम से रहित होती है ॥७७॥

अथ षष्ठभावस्थितशनिफलम् ।

मन्दोऽरिसंस्थः कुरुते विमन्दां
नारीं प्रधानां तनयैः समेताम् ।
प्रभूतवस्त्राभरणैः समेतां
गुणानुरक्तां पतिवल्लभां च ॥ ७८ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय छठे घर में शनि बैठा हो, तो वह स्त्री मंदमति, स्त्रियों में प्रधान, पुत्रों से युक्त, बहुत वस्त्र और आभूषणों से युक्त, गुणोंवाली तथा अपने पति को प्यारी होती है ॥७८॥

अथ सप्तमभावस्थितशनिफलम् ।

सौरोऽस्तसंस्थो विधवां प्रसूते
विवर्जितां वा पतिना सदैव ।
रोगाधिकां पानपरां कुमित्रां
प्रभूतदोषां बहुपापभाजम् ॥ ७९ ॥

जिस स्त्री के जन्मसमय सातवें घर में शनि बैठा हो, तो वह स्त्री विधवा होती है अथवा पति से वियुक्त रहती है, रोगिणी, मद्यपान करनेवाली, दुष्ट मित्रोंवाली, बहुत दोषों से तथा पापों से भरपूर होती है ॥७९॥

अथाष्टमभावस्थितशनिफलम् ।

स्थानेऽष्टमे सूर्यसुतः प्रसूते
स्निग्धां च नारीं निजकर्मदोषाम् ।
दुष्टस्वभावां गतकर्मसत्यां
मलिम्लुचां वंचनतत्परां च ॥ ८० ॥

जिस स्त्री के जन्म समय आठवें घर में शनि बैठा हो, तो वह स्त्री सरल, दुष्ट कर्मोंवाली, दुष्ट स्वभाववाली, सत्कर्मरहित, मलिन स्वभाव और प्रतारण करनेवाली होती है ॥८०॥

अथ नवमभावस्थितशनिफलम् ।

धर्माश्रितःसूर्यसुतःप्रसूते
कुकर्मरक्तां वनितां सदैव ।
व्ययाधिकां लुब्धसुहृत्समेतां
निसर्गदुष्टां धनवर्जितां च ॥ ८१ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय नवम घर में शनि बैठा हो, तो वह स्त्री कुकर्म करनेवाली, ज्यादा खर्च करनेवाली, लोभी मित्रोंवाली, स्वभावतः दुष्टप्रकृति और धनविहीन होती है ॥८१॥

अथ दशमभावस्थितशनिफलम् ।

कर्माश्रितः सूर्यसुतः प्रसूते
कुकर्मरक्तां विकृतानुकाराम् ।

कुशास्त्रसंगव्यसनाभिभूतां
निसर्गदुष्टां धनवर्जितां च ॥ ८२ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय दशवें घर में शनि बैठा हो, तो वह स्त्री कुकर्मिणी, विकृताङ्गी, शास्त्रविरुद्ध आचरणवाली, दुष्टसंगिनी, व्यसनासक्त, स्वभावतः दुष्टप्रकृति और धन से विहीन होती है ॥ ८२ ॥

अथ लाभभावस्थितशनिफलम् ।

लाभाश्रितो भास्करजः प्रसूते
रक्ताधिकां वातकफप्रगल्भाम् ।
विवेकहीनां कुटिलस्वभावां
सदा निरस्तां व्यसनाकुलां च ॥ ८३ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय ग्यारहवें घर में शनि बैठा हो, तो वह स्त्री रक्तविकारवाली, वात-कफ प्रकृतिवाली, विचारहीन, कुटिल स्वभाववाली, सदा तिरस्कृत और व्यसनों में आसक्त होती है ॥ ८३ ॥

अथ व्ययभावस्थितशनिफलम् ।

व्ययाश्रितो भास्करजः प्रसूते
व्ययेन युक्तां कृपणस्वभावाम् ।
असद्व्ययां पापरतां निरस्तां
निसर्गदुष्टां धनवर्जितां च ॥ ८४ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय बारहवें घर में शनि बैठा हो, तो वह स्त्री खर्चीली, कृपणस्वभाव, फिजूल खर्च करनेवाली, पापकर्म में रत, तिरस्कृत, स्वभावतः दुष्टप्रकृति और धनरहित होती है ॥ ८४ ॥

इति शनिभावफलम् ।

—:०:—

अथ तनुभावस्थितराहुफलम् ।

करोति राहुर्यदि लग्नसंस्थो
विरूपदेहां वनितां विशीलाम् ।
रोगाधिकां मानविवर्जिताञ्च
क्रोधान्वितां सर्वजनैर्निरस्ताम् ॥ ८५ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय लग्न में राहु बैठा हो, तो वह स्त्री विकलाङ्गी, शीलरहित, रोगिणी, मानहीन, क्रोधिनी और सब मनुष्यों से तिरस्कृत होती है ॥ ८५ ॥

अथ द्वितीयभावस्थितराहुफलम् ।

द्वितीयभावे यदि राहुसंस्थितो
वित्तैर्विहीनां कुरुते कुकान्ताम् ।
सौख्यैर्विहीनां विधवां सरोगां
दारिद्र्यदुःखान्वितपापभाजम् ॥ ८६ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय दूसरे घर में राहु बैठा हो, तो वह स्त्री धनहीन, दुष्ट पतिवाली, सौख्यरहित, विधवा, रोगिणी तथा दरिद्र, दुःख और पापों से युक्त होती है ॥ ८६ ॥

अथ तृतीयभावस्थितराहुफलम् ।

तमस्तृतीये वनितां प्रसूते
विहीनबन्धुं भगिनीविहीनाम् ।
सुपुष्टदेहां विजितारिवृन्दां
क्षमान्वितां रोगविवर्जितां च ॥ ८७ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय तीसरे घर में राहु बैठा हो, तो वह स्त्री भाइयों और बहनों से रहित, पुष्ट शरीर, शत्रुमान-मर्दिनी, क्षमाशील और रोगविहीन होती है ॥ ८७ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितराहुफलम् ।

करोति राहुः सुखगोऽल्पवित्तां
जनैर्विहीनां प्रमदां कृतघ्नाम् ।
चतुष्पदप्रीतिसरोगदेहां
विवर्जितां मातृसुखैर्नितान्तम् ॥ ८८ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय चतुर्थ स्थान में राहु बैठा हो, तो वह स्त्री थोड़े धनवाली, मनुष्यों से हीन, कृतघ्न, पशुओं से प्रीति करनेवाली, रोगिणी तथा माता के सुख से रहित होती है ॥ ८८ ॥

अथ पंचमभावस्थितराहुफलम् ।

सुताभिधाने भवने तमो वै
नारीं प्रमत्तां प्रसुताविहीनाम् ।

स्थूलास्यदंतां गणिकानुकारां
प्रभाविहीनां स्वजनैर्विमुक्ताम् ॥ ८९ ॥

जिस स्त्री के जन्मकाल में पंचम घर में राहु बैठा हो, तो वह स्त्री मदमाती, ऐश्वर्यहीन, मोटे (बड़े) मुख और दांत-वाली, वेश्याओं का-सा वेष धारण करनेवाली, कांतिरहित और आत्मीय जनों से परित्यक्त होती है ॥ ८९ ॥

अथ षष्ठभावस्थितराहुफलम् ।

तमोरिसंस्थः कुरुते प्रगल्भां
दयान्वितां सर्वजितारिपक्षाम् ।
प्रभूतविद्यां धनधान्ययुक्तां
सदा सुभाषीं पतिवल्लभांच ॥ ९० ॥

जिस स्त्री के जन्म समय छठे भाव में राहु बैठा हो, तो वह स्त्री धृष्टस्वभाव, दयायुक्त, शत्रुमानमर्दिनी, बहुत विद्या-वाली, धन-धान्ययुक्त, सदा मीठी वाणी बोलनेवाली और पति को प्यारी होती है ॥ ९० ॥

अथ सप्तमभावस्थितराहुफलम् ।

तमः कलत्रे पतिभावहीनां
नारीं प्रसूते कुरुते कुरूपाम् ।
सुदुष्टचित्तां कृपणां कृतघ्नां
सदा निरस्तां निजबन्धुवर्गैः ॥ ९१ ॥

जिस नारी के जन्म समय में राहु सप्तम भाव में स्थित हो, तो वह स्त्री पतिभाव से हीन, कुरूप, दुष्टचित्त, कृपण कृतघ्न और अपने बन्धुवर्गों से तिरस्कृत होती है ॥ ६१॥

अथाष्टमभावस्थितराहुफलम् ।

यदाष्टमस्थो दिननाथशत्रुः
सरोगदेहां विधवां कुरूपाम् ।
कठोरचित्तां व्यभिचारशीलां
महागदैः पीडितलोकहीनाम् ॥ ६२ ॥

जिस स्त्री के जन्मकाल में आठवें स्थान में राहु स्थित हो, तो वह स्त्री रोगिणी, विधवा, कुरूप, कठोरचित्त, व्यभिचारिणी, बड़े रोगों से पीड़ित और लोगों की दृष्टि में हीन होती है ॥ ६२॥

अथ नवमभावस्थितराहुफलम् ।

यदा तपस्थो रजनीशत्रुः
नारीं विधर्मां परधर्मपक्षाम् ।
प्रियामिषां पानपरां नृशंसां
वृथाटनां कीर्तिविवर्जितां च ॥ ६३ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय नवम स्थान में राहु बैठा हो, तो वह धर्मरहित, पराये धर्म का पक्ष करनेवाली, मांस खानेवाली, मद्य पीनेवाली, क्रूर, वृथा घूमनेवाली और यशरहित होती है ॥ ६३ ॥

अथ दशमभावस्थितराहुफलम् ।

सिंहीसुतश्चेद्दशमे स्थितः स्या-
न्नारीं प्रसूते पितृमातृहीनाम् ।
पत्या निरस्तां स्वजनैर्विरुद्धां
क्रोधान्वितां सर्वहृतारिपक्षाम् ॥ ६४ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय दशम स्थान में राहु स्थित हो तो वह नारी माता-पिता से हीन, पति से परित्यक्त, स्वजनों से विरोध करनेवाली, कोपिनी और शत्रुपक्ष को नाश करनेवाली होती है ॥ ६४ ॥

अथ लाभभावस्थितराहुफलम् ।

लाभे तमोऽतीव सुरूपयुक्तां
सदा विनीतां पतिवल्लभां च ।
तुरंगनागैः सहितां प्रसन्नां
सुभृत्यपुत्रैर्वनितां समेताम् ॥ ६५ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय लाभ स्थान में राहु स्थित हो तो वह स्त्री सुन्दर रूपवाली, हमेशा नम्र और पति को प्यारी, हाथी-घोड़ों की सवारी रखनेवाली, प्रसन्नचित्त, श्रेष्ठ नौकर और पुत्रों से युक्त होती है ॥ ६५ ॥

अथ व्ययभावस्थितराहुफलम् ।

राहुर्व्ययस्थः कुरुते कुकर्मा-
मसद्व्ययां दुःखदरिद्रभाजम् ।

जनैर्निरस्तां पतिपुत्रहीनां
व्ययाधिकां नेत्ररुजा समेताम् ॥ ९६ ॥

जिस स्त्री के जन्मकाल में बारहवें स्थान में राहु हो, तो वह स्त्री खोटे कर्मोंवाली, बुरे कर्मों में धन खर्च करनेवाली, दुःख-दरिद्र को भोगनेवाली, स्वजनों से तिरस्कृत, पति तथा पुत्रों से हीन, अधिक खर्च करनेवाली और नेत्ररोगिणी होती है ॥ ९६ ॥

इति राहुभावफलम् ।

अथ तनुभावस्थितकेतुफलम् ।

तनुस्थः शिखी बान्धवक्लेशकर्त्ता
तथा दुर्जनेभ्यो भयं व्याकुलत्वम् ।
स्वपत्यादिचिंता सदोद्वेगता च
शरीरे व्यथानेकधा मारुती स्यात् ॥ ९७ ॥

लग्न में केतु के होने से बन्धु-बान्धवों को क्लेश होता है तथा दुर्जनों से भय और व्याकुलता होती है। पति आदि की चिंता, सदा घबराहट और शरीर में अनेक प्रकार की वायुकृत पीड़ा होती है ॥ ॥ ९७ ॥

अथ द्वितीयभावस्थितकेतुफलम् ।

धने केतुरव्यग्रता किं नरेशा-
द्धने धान्यनाशो मुखे रोगकृच्च ।

कुटुंबाद्विरोधो वचः सत्कृतं वा
भवेत्स्वे गृहे सौम्यगेहेऽतिसौख्यम् ॥ ९८ ॥

धन स्थान में केतु स्थित हो, तो धन के विषय में राजा से अव्यग्रता होती है। अन्न का नाश, मुख में रोग, कुटुम्ब से विरोध और सत्कारयुक्त वचन से रहित होती है और यदि केतु अपनी राशि (मेष) का या मिथुन और कन्या का हो, तो उत्तम होता है, अनेक प्रकार के सुख को देता है ॥ ९८ ॥

अथ तृतीयभावस्थितकेतुफलम् ।

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं विवादं
धनं भोगमैश्वर्यतेजोधिकं च ।
सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीडा
भयोद्वेगचिंताकुलत्वं विधत्ते ॥ ९९ ॥

तृतीय स्थान में स्थित केतु शत्रुओं का नाश करता है, विवाद करता है, धन-भोग, ऐश्वर्य और तेज अधिक करता है, मित्रवर्ग का नाश होता है, हमेशा भुजा में पीड़ा रहती है, भय, घबराहट और चिन्ता से व्याकुल करता है ॥ ९९ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितकेतुफलम् ।

चतुर्थे च मातुः सुखं नो कदाचित्
सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशमेति ।
शिखी बन्धुवर्गात्सुखं स्वोच्चगेहे
चिरं नो वसेत्स्वे गृहे व्यग्रता चेत् ॥ १०० ॥

चतुर्थ भाव में केतु हो, तो माता और मित्रवर्ग से कदापि सुख नहीं मिलता है, पिता की संपत्ति नष्ट हो जाती है और अपने घर में निवास नहीं होता है, यदि हुआ भी तो व्यग्रता होती है। यदि केतु उच्च का (धन) या अपनी (मीन) राशि में हो तो बन्धुवर्ग से सुख होता है ॥१००॥

अथ पंचमभावस्थितकेतुफलम् ।

यदा पंचमे राहुपुच्छं प्रयाति
तदा सोदरे घातवातादिकष्टम् ।
स्वबुद्धिर्व्यथा संततः स्वल्पपुत्रा
सदा साभवे द्वीययुक्ता च बाला ॥१०१॥

जब पंचम घर में केतु होता है तब सहोदर भ्राताओं को शस्त्र-प्रहार और वातादि से कष्ट होता है, अपनी बुद्धि से ही व्यथा होती है, पुत्रसुख थोड़ा होता है और वह स्त्री सदा वीरतायुक्त होती है ॥१०१॥

अथ रिपुभावस्थितकेतुफलम् ।

तमः पृष्ठभागे गते षष्ठभावे
भवेन्मातुलान्मानभंगो रिपूणाम् ।
विनाशश्चतुष्पात्सुखं तुच्छचित्तं
शरीरे सदाऽनामयं व्याधिनाशः ॥१०२॥

षष्ठ भाव में केतु हो, तो मातुल (मामा) से मानहानि होती है, शत्रुओं का नाशहोता है, गो आदि चौपाये पशुओं

से सुख होता है, चित्त तुच्छ होता है, सदा शरीर में निरोगता रहती है और रोग का नाश होता है ॥१०२॥

अथ सप्तमभावस्थितकेतुफलम् ।

शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिंता
निवृत्तः स्वनाशोऽथवा वारिभीतिः ।
भवेत्कीटगः सर्वदा लाभकारी
स्वपत्यादिपीडा व्ययोऽव्यग्रताचेत ॥१०३॥

सप्तम भाव में केतु हो, तो मार्ग में चलने की अधिक चिन्ता होती है, धन का नाश अथवा जल से भय होता है। पति आदि को पीड़ा, व्यय और चित्त में व्यग्रता होती है और सप्तम केतु वृश्चिक राशि का हो तो लाभकारी होता है ॥१०३॥

अथाष्टमभावस्थितकेतुफलम् ।

गुदं पीडयतेऽर्शादिरोगैरवश्यं
भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्य रोधः ।
भवेदष्टमे राहुपुच्छेऽर्थलाभः
सदा कीटकन्याऽजगोयुग्मकेतुः ॥१०४॥

केतु अष्टम स्थान में हो, तो बवासीर आदि रोगों की पीड़ा निश्चय होती है, वाहनादि का भय और अपने धन की रोक होती है (अपना धन समय पर नहीं मिलता है)। यदि अष्टम में केतु वृश्चिक-कन्या या मिथुन-मेष-वृष में स्थित हो तो सदा धन का लाभ होता है ॥१०४॥

अथ नवमभावस्थितकेतुफलम् ।

शिखी धर्मभावे यदा क्लेशनाशः
सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः ।
सहोत्थव्यथां बाहुरोगं विधत्ते
तपोदानतो हास्यवृद्धिं तदानीम् ॥१०५॥

यदि धर्म स्थान में केतु हो, तो क्लेशों का नाश, पुत्र की इच्छा, म्लेचछ से भाग्य की वृद्धि, भ्राताओं से पीड़ा, और भुजा में रोग होता है। तप तथा दान से हँसी कराता है ॥१०५॥

अथ दशमभावस्थितकेतुफलम् ।

पितुर्नो सुखं कर्मगं राहुपुच्छं
तदा दुर्भगं कष्टभाजं करोति ।
तदा वाहने पीडितं जातु जन्म
वृषाजालिकन्यासुचेच्छत्रुनाशम् ॥१०६॥

जिस स्त्री के कर्म स्थान में केतु हो उसको पिता का सुख नहीं होता है, कुरूप और कष्ट भोगनेवाली होती है और वाहन के निमित्त पीड़ा होती है। यदि कर्मभाव में वृष, कन्या, वृश्चिक या मेष का केतु हो तो शत्रुनाशक करता है ॥१०६॥

अथ लाभभावस्थितकेतुफलम् ।

सुभाग्या सुविद्याधिको दर्शनीयः
सुगात्रः सुवस्त्रः सुतेज्योऽपि तस्याः ।

दरे पीडयते संततिर्दुर्भगा च
शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति ॥१०७॥

लाभ स्थान में केतु हो, तो भाग्य की वृद्धि, विद्या से शोभित, दर्शनीय सुन्दर रूप, अच्छा शरीर, सुन्दर वस्त्रयुक्त और तेजस्विनी होती है। उदरपीड़ायुक्त, खोटी संतान वाली होती है तथा केतु अपने स्थान में हो तो सब प्रकार का लाभ करता है ॥१०७॥

अथ व्ययभावस्थितकेतुफलम् ।

शिखी रिष्फगो बस्तिगुह्यांघ्रिनेत्रे
रुजा पीडनं मातुलान्नैव शर्म ।
सदा राजतुल्यां श्रियं सद्व्ययां त-
द्रिपूणां विनाशं रणे सा करोति ॥१०८॥

जिस स्त्री के द्वादश स्थान में केतु हो, तो योनि, गुदा, पैर और नेत्रों में रोग की पीड़ा होती है। मामा से सुख नहीं होता है। सदा राजाओं के तुल्य करता है, तथा श्रेष्ठ कार्य में व्यय करता है, तथा लड़ाई में उसके शत्रुओं का नाश करता है ॥१०८॥

इति केतुभावफलम् ।

श्लोक

फर्रुखाबादविप्रेन्द्रः मणिलालात्सुजन्मनः ।
राजारामकवेर्जीयात्कृतिः कृष्णपदार्पिता ॥१॥

पं० राजाराम ज्योतिषी खतराना, फर्रुखाबाद ॥